बृहस्पति जी की आरतीी

बृहस्पति जी की आरतीी

ॐ जय बृहस्पति देवा, जय बृहस्पति देवा।

छिनिन-छिन भोग लगाऊंि न भोग लगाऊं कदली फल मेवा।।

ॐ जय बृहस्पति देवा।।

तुम पूर्ण परमात्माुम पूर्ण परमात्मा, तुम अंतर्यामीमी।

जगतपिता जगदीश्वर

ा जगदीश्वर, तुम सबकेस्वामी।ुम सबकेस्वामी।।

ॐ जय बृहस्पति देवा।।

चरणामृत निज निर्मलल, सब पातक हर्ता

।

सकल मनोरथ दायक, कृपा करो भर्ता।

।।

ॐ जय बृहस्पति देवा।।

तनन, मन, धन अर्पण कर

कर, जो जन शरण पड़े

े।

प्रभु प्रकट तब होकरब होकर, आकर द्वार खड़े।े।।

ॐ जय बृहस्पति देवा।।

दीनदयाल दयानिधि

, भक्तन हितकारी

कारी।

पाप दोष सब हर्ता

, भव बंधन हारी।।

ॐ जय बृहस्पति देवा।।

सकल मनोरथ दायक, सब संशय तारोारो।

विषय विकार मिटाओटाओ, संतन सुखकारी।न सुखकारी।।

ॐ जय बृहस्पति देवा।।

जो कोई आरती तेरी प्रेम सहित गावे

गावे।

जेष्टानंद बंद सो-सो निश्चय पावे।

श्चय पावे।।

ॐ जय बृहस्पति देवा।।